ISSN : 2249-6661
Vol-44, No.-1 (F) January-March (2021)

डॉ॰ लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में विशुद्ध लोक नाट्य शैली के दर्शन 'सगुन पंछी' नाटक के सन्दर्भ में

डॉ. चित्रा सिंह
शोध निर्देशक

भारती सिंह
शोधार्थी
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

1. प्रस्तावना

नाटक लेखन और अभिनय तन्त्र–रंगमंच के निरन्तर संपर्क में रहने के कारण लाल के नाटकों में काव्यत्व और दृश्यत्व का संतुलन मिलता है। इस अर्थ में डा. लाल के नाटक सदा सर्वत्र जागृत है। वे पन्द्रह वर्ष तक रंगमंच से जुटे रहे। उन्होंने कहा कि इसका यह लाभ हुआ कि मेरे नाटकों में वैविध्य आया। उन्होंने कहा "बिना रंगमंच का व्यावहारिक अनुभव प्राप्त किए, सार्थक नाट्य लेखन असंभव है।

नाट्य लेखन और नाटक मंचीकरण का अनुसन्धान करके डा. लाल ने दो बातें उपलब्ध की है, भारतीय दर्शन और भारतीय नाट्य परंपरा । अर्थात् भारतीय नाटक भारतीय दर्शन के लिए होना चाहिए और हमें अपनी नाट्य परंपरा से जुड़कर अपनी रंगशैलियों का विकास करना चाहिए। "नाटक समीक्षकों के लिए लिखे न जाये।

सोमर सेट मॉम के इस कथन को डा. लाल ने स्वीकार किया है। जनता में नाटक के प्रति रुचि उत्पन्न करना भी नाटककार और रंगमंच निर्देशक का कर्तव्य है। डा. लाल नाटककार एवं रंगमंच निर्देशक है। अतः उन्होंने भारतीय नाट्य परंपर का पुनरूद्धान किया, ऐसा कहना गलत नहीं है। भारतीय दर्शन एवं भारतीय नाट्य परंपरा को सामने रखकर डा. लाल ने जो नाट्य लेखन किया वह दर्शक एवं समीक्षक दोनों द्वारा प्रशंसित हुआ है। "सत्य हरिचन्द्र", "सगुन पंछी" आदि ज्वलंत उदाहरण है। भारतीय दर्शकों को रंजित करने वाले सभी तत्व जो भारतीय दर्शन के रंजन करते है, इन नाटकों में द्रष्टव्य है। परंपरा से जुड़कर भी ये नाटक आधुनिक है, क्योंकि इन में अपना युग, अपना संदर्भ मूर्ति मंत है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि उनका रंगमंच भारतीय है और भारतीय दर्शन के लिए है।

2. विषय वस्तु

सगुन पंछी (1977)

सार्थक और जीवन्त नाट्य कृतियाँ अपनी जमीन के संस्कारों की उपज होती है। परंपरा और जनजीवन से जुड़कर नाटक जीवन के कुछ ऐसे अर्थों के अवगुंठन खोलता है जिसे सहज भाव से अपनाया जा सके। इस दिशा में सगुन पंछी एक सशक्त प्रयास है। सगुन पंछी के रूप में वस्तुतः डा. लाल के पुराने नाटक का पुनर्जन्म है। सगुन पंछी के पुनर्जन्म का इन के अलावा एकऔर वस्तुगत संदर्भ भी है। भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में लोक कथा के रूप में "तोता–मैना" की कहानी काफी प्रचलित रही है। इस लोक कथा में तोता पुरुष पक्ष से अपनी कहानियों द्वारा स्त्रियो के विश्वासघात और हरजाईपन (आवारापन) का तथा मैना स्त्री पक्ष से पुरुषों की बेमुरौवती, उपेक्षा नीति और शोषक चरित्र को प्रकट कर दोनों के बीच विरोधी स्वभाव को स्पष्ट करते है। दोनों की पक्षों का यह आक्षेप, जाति गत है। इसलिए यह अर्द्ध सत्य है। इस अर्द्ध सत्य को आधार बनाकर डा. लाल ने तोता–मैना नाटक लिखा 1960 में। यह नाटक कई जगह

Copyright © 2021 Authors

ISSN : 2249-6661
Vol-44, No.-1 (F) January-March (2021)

खेला गया। इसका संशोधित नाटक है "सगुन पंछी"। कुछ दिनों बाद तोता मैना रोक लिया गया। "सगुन पंछी" एक सिद्धहस्त नाटककार के संशोधना से गुजरा और नये नाटक की भूमिका में डा. लाल ने कुछ नयेपन का संकेत दिया भी है। 1960 से 1977 तक की अपनी नाटक रचना यात्रा के बाद लाल का अनुभव था कि स्त्री–पुरूष का यह तनाव शाश्वत नहीं। स्त्री पुरुष संबन्ध तनावपूर्ण हो तो भी सहज है। जीवन एक साधना है। साधना जीवन की धुरी है। जीवन रथ की इस धुरी में स्त्री–पुरुष दो पहिए हैं। जब दोनों साथ साथ चले, जीवन सहज है। जीवन का यह रूप जीवन को (स्त्री–पुरुष संबन्धों को) भोगविलास का सामना नहीं मुक्ति का मार्ग बताता है। तोता मैना की शादी कराकर हंसने दोनों चक्रों को साथ साथ चलनेवाले कर दिये। यह मिलन है प्रकृति और पुरुष का नियता नियति का। स्त्री पुरुष को एक जगह मिलना ही है, जीवन को जीवन की तरह जीने के लिए।

सगुन पंछी की कथा तोता मैना की कथा की ही कथा है। पूर्व रंग में दिखाया जाता है कि आँधी से नीड नष्ट हो जाने के कारण एक, तोता उस डाल पर आश्रय लेने आता है जिस पर मैना रहती है। मैना रहने न देती क्योंकि उसे पुरुष गति पर भरोसा नहीं। इस पर तोता भड़क उडता है और स्त्रियों की मूर्खताओं की कथा सुनाता है, अंगध्वज की कहानी। मैना गंगा और पंचम की कथा कहकर अपना पक्ष प्रस्तुत करती है सारे पक्षी और विदूषक भी यथावसर अपनी भमिकाएं निभाते है।

कथा संक्षेप में इस प्रकार है कि कंचन पुर नामक किसी नगर का राजा था अंगध्वज उसकी रानी थी रूपमती। दोनों में प्रगाढ प्रेम था, नगर के निकटतम गांव में ही रहता था पंचम और उसकी प्रेयसी पत्नी गंगा। उनका प्रेम भी आदर्शपूर्ण था। पहले अंक के पहले दृश्य में मंच के आधे–आधे हिस्से पर दोनों ही दंपतियों की प्रेमलीला दिखाई देती है। इसके बाद शुरू होती है राजा अंगध्वज की कहानी। रानी के कान का हजारा मोती खो गया है और उसे खोजने पाने की जिद वह राज से किये जा रही है। राजा और राजकर्मचारी मोती खोजने में बुरी तरह व्यस्त है। पर मिलता नहीं। रानी की जिद पर राजा मोती लाने के लिए रातों रात निकल पडता है। रास्ते में उसकी एक बूढ़े से भेंट होती है। वह बूढा उसे पिछले जन्म का रहस्य बताता है और एक भारी दुर्घटना का संकेत देता है। चेतावनी भी थी कि रहस्य खुलता तो पर पत्थर हो जायेगा। पिछले जन्म में राजा मणिसेन नामक व्यापारी था। राणी रूपमति उस जन्म में उसकी पत्नी थी केसर। एक बार वह विदेश व्यापार हेतु गया था तो वासना की आग में तपती हुई केसर ने अपने ब्राह्मण नौकर रतनजोत, से अपनी वासना बुझानी चाही। वह किशोर ब्राह्मण धर्म भीरु था। इसका बदला केसर ने उसे जीवित ही आँगन में गडवा दिया। मणिसेन जब लौटा तो उसे झूठी–सच्ची कथा कहकर केसर ने ब्राह्मण कुमार को दफना कर दिया। निरपराध दंडित होने के कारण बनने की भावना ने ब्राह्मण कुमार को प्रेत बना दिया और अब वही प्रेत राजा–रानी से अपने पूर्वजन्म का वैर चुकाने आनेवाला है। यह जानकर राजा दुःखी होकर महल लौटता है और सुरक्षा के सभी उपाय करते हैं। रानी राजा की चिन्ता का कारण जानना चाहती है। पत्नी–धर्म के अनुसार। राजा टालता जाता है चेतावनी के अनुसार। इससे रानी में संशय उत्पन्न होता है। वह समझती है कि राजा उस पर विश्वास नहीं करते। रानी को यह पत्नी के अधिकार पर चुनौती प्रतीत होती। इससे वह राजा से बार–बार जिद करती है। जिद के कारण और चिंता के कारण राजा चिढ़ता जाता है। पति–पत्नी एक दूसरे से दूर होते जाते है। राजा के यह समझाने पर कि चिता के कारण बताने पर वह पत्थर हो जायेगा – रानी को विश्वास नहीं होता और वह इसे बहाना समझती है। अंततः राजा प्रेम की खातिर आकर अगले दिन सुबह गंगा के किनारे सार्वजनिक रूप से रहस्य खोलने और पत्थर बनने की बात स्वीकार कर लेते है। जब दूसरी सुबह सभी गंगातट की ओर जा रहे हैं तब उन्हें एक और ही दृश्य दिखाई पडता है। नदी तट पर गंगा और पंचम की लडाई चल रही होती है। चुनरी और मुनरि के लिए गंगा रूठी हुई थी जिद कर रही थी और पंचम अपनी मजबूरी उसे समझा रही थी। गंगा समझती नहीं मानती नहीं तो वह नाराज होकर लट्ठ लेकर उसके पीछे पड़ जाता है। गंगा आश्रय मांगती फिरती है। यह देखकर राजा को ऐसा लगता है जैसे एक स्त्री की मुर्खता के कारण व्यर्थ ही वह अपने प्राण गंवा रहा है। डाँट – फटकार कर वह अपनी रानी को वापस

Copyright © 2021Authors

ISSN : 2249-6661
Vol-44, No.-1 (F) January-March (2021)

करता है। लेकिन दोनों के बीच आई दूरी में कोई अंतर नहीं पड़ता। राजा को अपने जीवन की इस घटना और गंगा एवं पंचम के बीच का संबन्ध तथा पूर्व जन्म की घटना का ज्ञान चिंता में डाल देता है और वह स्त्री पुरुष के संबन्धों की गहराई को मापना चाहता है। रानी के व्यवहार से जो समझा वह उसे पूरा न लगता। वह गंगा और पंच दम्पति को ही साधन बनाकर कुछ और गहरे उतरना चाहता है, रानी के संपर्क से दूर हो जाता है। गंगा को बुलाकर उसे प्रलोभन देता है ताकि उससे प्रेम की प्रकृति जान सके, उसकी निष्टा पहचान सके । पंच को वह महल में रख देता है – रानी की सेवा में। राजा से दूर रानी और गंगा से दूर पंचम – राजा का यह भी एक प्रयोग था। गंगा और पंचम के सारे संपर्क – सत्र को विच्छिन्न कर देता है। जब राजा वह पाता है कि अलग होकर भी, सारे प्रलोभनों को ठुकराकर भी गंगा और पंचम एक दूसरे को समर्पित है तो वह पंचम को कैद करवा लेता है और गंगा की निष्टा तोडने के लिए, कुछ व्यक्तिकयों को नियुक्त कर देता है। राजा यहां भी असफल होता है – पंचम और गंगा फिर भी मिलते हैं। दोनों को एक दूसरे से काफी शिकायतें है लेकिन दोनों को एक दूसरे के लिए अथाह प्रेम भी है। इधर अकेली रानी को मंत्री लुभाना चाहता है। मंत्री उसे पूर्व जन्म की वह घटना भी सुनाता है जो उसने राजा और वृद्ध की दृष्टि से ओझल रहकर सुन ली थी। रानी अप्रभावित रहती है। मंत्री बल प्रयोग करता है तो संघर्ष होता है और रानी की मृत्यु हो जाती है। पंचम से सारी कथा जानकर राजा मंत्री को कैद कर लेता है और अपना आधा जीवन रानी को दान कर उन्हें फिर से जीवन दान देता है। राजा रानी को उसके नव जीवन का रहस्य भी नही बता सकता था अन्यथा जीवन दान विफल काम सिद्ध होगा। इसलिए अपने नवजीवन का रहस्य जानने के लिए प्रलोभन रानी देती है और जब उसे पता चलता है कि उसे नवजीवन राजा ने प्रदान किया – अपनी आयु बाँटकर तो वह विभिन्न प्रतिक्रियाओं से घिर जाती है। रानी अपने जीवन से जीना चाहती है – निजत्व खोना नही चाहती। इसलिए राजा से अपना दान वापस लेने को कहती है। राजा उसे स्वीकार नहीं करता और यह स्वीकार करता है कि पुरुष और स्त्री का संबन्ध बाह्य आधारों पर टिका नहीं होता। संबन्धों में जहाँ जितना विश्वासघात दिखता है – वहीं उतना ही विश्वास भी होता है। विश्वास को नष्ट कर वह विश्वास की परीक्षा लेने में असफल रहा। उसके सामने पंचम और गंगा का उदाहरण मौजूद है। कथा के अंत में गंगा और पंचम का मिलन होता है और राजा–रानी का मिलन होता है। गंगा का अविश्वास कि पंचम ने रखैल रख ली है, पंचम का अविश्वास कि गंगा राजा की रखैल बन गयी है, राजा का अविश्वास कि रानी मंत्री से प्रेम करने लगी है और उस पर अंधविश्वास कि राजा उससे विश्वासघात कर रहा है। सब बाहरी आधार पर टिके हैं, सब बे–बुनियाद है। नर–नारी के बीच विश्वास अविश्वास का यह संघर्ष केवल संघर्ष के रूप में दिखता भर है, वस्तुतः होता नही, होता है विश्वास।

कथावस्तु के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि इस नाटक का कथ्य है स्त्री पुरुष के शाश्वत संबन्ध की परस्पर विरोधी प्रकृति को स्पष्ट करते हुए एक ऐसे समन्वित और कल्याण प्रद जीवन दर्शन की तलाश जो स्त्री पुरुष के संबन्ध में जीवन का सहज प्रवाह भर दे। सभी प्रसंग यह स्पष्ट करते है कि विरोधों के बावजूद स्त्री और पुरुष एक दूसरे के बिना अपूर्ण होते हैं जीवन की लय पर नाटककार जोर देता है यह लय संघर्ष–समाधान, विरह–मिलन आदि विरोधी तत्वों पर टिका हुआ है।

3. शोध निष्कर्ष

सगुन पंछी का रचना–विधान विशुद्ध लोक नाट्य शैली में प्रस्तुत किया गया है। नाटक का आधार लोक कथा है, चरित्र कथाश्रित है। लोक नृत्य, लोकगीत, लोककथा लोक चरित्र के साथ साथ लोकनाट्य की रूढियों का उपयोग नाटक में लोक जीवन के विविध पक्षों के सब रंग प्रस्तुत करते है।

राजा रानी के टूटते हुए संबन्ध को मोती के खोना और जुड़ते हुए संबन्ध को मोती का मिलना संकेतित करता है। "लीला भाव" से सगुन पंछी की रचना हुई है।

Copyright © 2021Authors

ISSN : 2249-6661
Vol-44, No.-1 (F) January-March (2021)

4. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) शोध ग्रन्थ के आधार ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ :–

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक :–

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अंधा कुआँ, अम्बर प्रकाशन, करोल बाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1955
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अब्दुल्ला दीवाना, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1973
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, एक सत्य हरिशचन्द्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 1967
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कजरीवन, आरती प्रकाश संस, दिल्ली, 1980
5. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971
6. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कर्फ्यू, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली संस्करण, 1972
7. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कलंकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण,1969
8. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गंगामाटी, पीताम्बर, बुक डिपो, दिल्ली संस्करण, 1977
9. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गुरू शिप्रा प्रकाशन, आगरा, 1974
10. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, चतुर्भुज राक्षस, पी.ए. मिश्रा, अजमेर 1976
11. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, दर्पण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण 1966
12. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, नरसिंह कथा, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
13. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, तोता मैना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
14. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मादा कैक्टस, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
15. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मिस्टर अभिमन्यु, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
16. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, यक्ष प्रश्न, राजपाल एण्ड संस दिल्ली, 1976
17. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रक्तकमल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966
18. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रातरानी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962
19. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, राम की लड़ाई, अम्बर प्रकाशन, दिल्ली, 1983
20. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सगुन पंछी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1977
21. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सबरंग मोहभंग, सरस्वती विहार, 1977
23. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पंचपुरुष, लिपि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1978
24. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूर्यमुख, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
25. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, बलराम की तीर्थयात्रा, नई दिल्ली, पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, द्वितीय संस्करण 1984

Copyright © 2021Authors

Sambodhi

CERTIFICATE OF PUBLICATION

Sambodhi Journal s delighted to award you for publishing your Research Paper Entitled

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में विशुद्ध लोक नाट्य शैली के दर्शन 'सगुन पंछी' नाटक के सन्दर्भ में

Authored By

डॉ. चित्रा सिंह, असि. प्रोफेसर, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर
भारती सिंह, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

Published in Vol-44 Issue-01 (F) January-March 2021 of Sambodhi Journal with ISSN : 2249-6661

UGC Care Approval Indexed, Peer Reviewed and Referred Journal

Impact Factor 5.80

We Heartily Congratulate you for the Successful Publication

Mahaley Patel

Editor, Sambodhi Journal

ISSN No.: 2249-6661 (Print)

Kala Sarovar
(UGC Care Group-1 Journal)

ISSN : 0975-4520
Vol-24 No. 01(A) January-March 2021

डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में आजादी के बाद भारत की अंतर्व्यथा का निरूपण 'रक्त कमल' के सन्दर्भ में

डॉ. चित्रा सिंह
शोध निर्देशक

भारती सिंह
शोधार्थी
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर

1. प्रस्तावना

डा. लक्ष्मी नारायण लाल हिंदी के सशक्त रचनाकार हैं जिन्होंने मानव जीवन के तमाम पहलुओं का सजीव अंकल अपनी रचनाओं में किया है। उनकी साहित्यिक रचनाएं उनकी रचना यात्रा की प्रकृति तथा उनके साहित्यिक व्यक्तित्व की पहचान हैं जो भी जो विविध सामाजिक राजनीतिक पक्षों से युक्त लेखक की जीवनानुभूती है। लाल जी यद्यपि राजनीति से सीधे जुड़े नहीं रहे, फिर भी राजनीतिक चेतना उन्हें भरपूर थी। इसलिए ही वे अपनी रचनाओं में राजनीतिक पहलुओं की सच्ची अभिव्यक्ति कर सके। उनके एकांकी भी राजनीतिक मूल्य के सच्चे चित्रण के कारण बहुत ही सराहनीय हैं। आगे भी पंक्तियों में लाल के विभिन्न एकांकियों में अभिव्यक्त राजनीतिक मूल्यों को रेखांकित किया जाएगा

2. विषय वस्तु

रक्त कमल 1962

भारत की आजादी के लिए भारतीय एक जुटकर रणांकण में उतरे। एकमात्र नारा था – आजादी – आजादी। अब जब देश आजाद हुआ तो आजादी गुमराह हो गयी वह समस्त चेतना जो कल तक संपूर्ण देश को आजाद करने में एकाग्र थी, अब बिखरकर संप्रदाय, जाति, वर्ग, वर्ण, भाषा न जाने कितने आधारों पर बंट गये हैं। निजी और व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर जब तक भावना के धरातल पर हम एक सूत्र नहीं बाँधते, शक्ति संगठित नहीं होगी और राष्ट्रीय चेतना का निरंतर ह्रास

ISSN : 0975-4520
Vol-24 No. 01(A) January-March 2021

होता जायेगा। अकसर हम अपने को छिपाने के लिए, यथार्थ के साक्षात्कार से अपने को बचाने के लिए खूबसूरत बहानों की तलाश किया करते हैं। विभाजित आस्थाओं के इस देश की विभिन्नता में एकता को नारे के सहारे अधिक दिनों तक जीवित नहीं रखा जा सकता क्यों कि भ्रम चाहे जितना भी सुन्दर हो, उससे वास्तविकता नहीं बदल जाती। सच्चाई यह है कि भाषा, जाति, वर्ण, वर्ग, संप्रदाय आदि के अवांतरों से देश निरन्तर खोखला होता जा रहा है। स्वार्थ लिप्सा, पारस्परिक द्वेष, हिंसा, घृणा जैसे भाव हमारे आन्तरिक सामाजिक जीवन को विष्मय एवं असह्य बनाते जा रहे हैं।

राष्ट्रीय जीवन की ओर संकेत करते हुए नाटककार कहता है, "जीवन का सुख तो सूर्य की तरह है जिस में सब एक हैं – सब समान है। और जीवन का संकट है समाज की सामाजिक जीवन की असमानता।"16 डा. लाल ने जीवन को विभिन्न परिप्रेक्ष्यों से अपने नाटकों में प्रस्तुत किया। "रक्तकमल" में आजादी के बाद की जीवन चर्चा का एक खंड चित्र अवतरित किया है। इस नाटक का एक पात्र कमल है जो कहता है कि "मेरी सारी चिंता देश की सोई हुई चेतनता से है, मैं उसी को जगाना चाहता हूँ।" चेतना का अर्थ कनु (कन्हैया – महावीर प्रसाद का नौकर और कमल का भक्त) कहता है "चेतना का मतलब है प्रकाश; जग जाना – स्वार्थ से परमार्थ की ओर और इस तरह पूरे समाज को जगाना।"17 यह जगाना तभी संभव है जब एक दूसरे को स्वीकार करे उसकी ओर अग्रसर हो।

महावीरदास एक उद्योगपति है। सुविधा देखकर वे गया से अपना उद्योग उठाकर इलाहाबाद के पास नैनी के पिछड़े इलाके में कॉस्मेटिक्स का उद्योग खोलते है। नाम है "श्रीदास इन्डस्ट्री"। यह दूसरी विडंबना है। देश को चाहिए अन्न और वस्त्र जिसकी जरूरत नब्बे प्रतिशत लोगों को है। उसकी जगह पूँजी पति लोग उघोग साज–श्रृंगार का सामान तैयार करते हैं, दस प्रतिशत लोगों के लिए। महावीर दास को ये नब्बे प्रतिशत लोग पशु है। उन्हों ने अपने बंगले के लिए कन्हैया के पिता की दो बीघा जमीन जबर्दस्ती उससे हथियाली और जब कन्हैया विरोध प्रकट करने लगा तो उसे मखा डाला । आयकर के हिसाब मैं फेरा फेरी करने के लिए एम. एल. ए. को उत्कोच देकर अपने पक्ष में कर लेता है और जब

ISSN : 0975-4520
Vol-24 No. 01(A) January-March 2021

बात छुल गयी तो एम. एल. ए बर्खास्त हो गया तो उपचुनाव में गुरुराम के साथ षडयन्त्र रचकर नये एम. एल. ए. इन्द्रजीत को विजयी कर दिया। कमल महावीरदास का छोटा भाई है। तकनीकी उच्च शिक्षा के लिए पिता उसे विदेश भेजते है। कमल भावुक व्यक्ति है। इसलिए विदेशों में भारत पर किये जाने वाले सारे व्यंग्य उसके शारीर में तीर की तरह चुभ जाते हैं। वह शिक्षा पाकर लौट आया, भारत भर भ्रमण कर देखता है कि देश पिछड़ा हुआ है। आजादी का दुस्पयोग हो रहा है। नये भारत के निर्माण की जरूरत है।

वह महावीरदास के साथ रहने लगता है तो उसे अनुभव हुआ कि भाई दीन गरीबों पर अत्याचार करता है। उसने देखा कि हम दोनों दो ध्रुवों पर है। कमल जनसाधारण, किसान और मजदूरों में नवजागरण के मंत्र फूँकने लगता है। वह नाटक का आश्रय लेता है। अमृता, कनु और सारंग उसके वफादार साथी है। शीघ्र ही उसके आदर्श चरित्र, उच्च विचार और विवेकपूर्ण आचरण के प्रभाव में आकर डाकू बिल्लू सिंह और गुरुराम जैसे पतित व्यक्ति भी कमल के साथ हो जाते हैं। महावीरदास का बेटा पप्पू भी उसके साथ है। कमल पप्पू को अगस्त्य कहा करता था। अगस्त्य ने टिटहरी के अंडों को ले, समुद्र को सोख डाला और टिटहरी को उसने अंडे दिलवाये। कमल सोचता है कि पप्पू आने वाली पीढी है। पप्पू भी अगस्त्य की तरह साधारण जनता के शोक निवारण में आयेगा, यही कमल की आशय है। पिता महावीर दास को पप्पू का इस प्रकार कमल से आकर्षित होना पसंद नहीं था। इसलिए वह छुट्टी के खतम होने के पहले ही उसे देहरादून स्कूल भेजता है। यह पप्पू को अच्छा न लगा। कमल चाहता है पप्पू के मन में क्रान्ति का विचार जम जाये और उससे अगली पीटी तक यह संप्रेषित हो जाय। कमल भी घर छोडता है। छोडने के पहले वह पप्पू से कहता है "मेरे नये अगस्त्य, तुम्हें इस विषाक्त समुद्र को सोखना है ताकि हमें मनुष्य का यह विलुप्त प्रकाशा उसकी समानता, एकता और उसके गौरव मिल सके। नहीं तो अलग–अलग यह गरीब बेचारा मनुष्य टिटहरी की तरह इस विषैले समुद्र को कहाँ कैसे अपनी चोंच के सहारे सखा पायेगा।" जाने से पहले भाई महावीर प्रसाद से भी कहता है। पप्पू अगस्त्य होगा। उसके जन्म प्लास्टिक का गुड्डा बनेने के लिए नहीं हुआ है क्यों

ISSN : 0975-4520
Vol-24 No. 01(A) January-March 2021

कि उसका जन्म हमारी तरह गुलाम भारतवर्ष में नहीं हुआ है।........ उसमें उपनिषद, गीता, बाइबिल और कुरान की समन्वित चेतना शक्ति हो।" घर में ज्ञान और क्रान्ति का दीप जलाकर अब वहाँ प्रकाश बाँटने के लिए निकल पड़ता है। सब लोग उसके महा–प्रस्थान को देख रहे।

डा. लाल की यह नाट्य रचना एक व्यापक नाट्यानुभति पर आधारित है। "राष्ट्रीय समस्या को राष्ट्रीय जीवन के साथ जोड़कर देखने की यह नवीन दृष्टि नाटककार के जीवन–दर्शन का एक सशक्त पक्ष।" ताम्यवादी चिंतन के जो भार कमल के भाषणों के माध्यम से यहाँ दर्शक और पाठक पर जबर्दस्ती डाला जाता सा प्रतीत होता है। "गंगामाटी", "चतुरभुज राक्षत" और "संस्कार ध्वज" में वही अपने नितान्त सहज प्रयास के साथ अभिव्यक्त हुआ है। जिस महत् उद्देश्य को लेकर कमल अंततः घर की सीमाओं को तोडकर बाहर निकल जाता है और मानवीय आदर्शों के प्रतीक चरित्र डाक्टर साहब को यह कहना पड़ता कि– "कमल तेरी पाणी की जय।" "मैं तेरे पवित्र स्वर में असंख्य कमल खिलते देख रहा हूँ। मेरा रक्त कमल ! जब तू बोलता है, तेरी आँखों के सागर में एकबहुत बड़ा कमल खिल जाता है। सहस दल कमल। जिस की पंखुडिया काश्मीर से कन्याकुमारी और द्वारिका से ब्रह्मपुत्र तक फैली रहती है।

3. शोध निष्कर्ष

रक्त कमल के प्रारंभ और अंत दोनों ही स्थलों पर कमल दारा दो प्रतीक–प्रदर्शन रूपात्मक अभिव्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किये जाते। यह दोनों रूपकात्मक दृश्य "रक्त कमल" की मूल संवेदना को वहन करने में पूर्णतः सक्षम सिद्ध हुए हैं। डा. लाल के इस नाटक में जो उपरूपक है, कमल द्वारा प्रस्तुत किये गये दो फंतासी पूर्ण दृश्य, वस्तुतः वे प्रभी क शैली में भारत की अंतर्व्यथा का निरूपण है। ह्रासमान मूल्यों की प्रतीक कथा।

4. सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(क) शोध ग्रन्थ के आधार ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ :–

लक्ष्मीनारायण लाल के नाटक :–

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अंधा कुआँ, अम्बर प्रकाशन, करोल बाग, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1955
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, अब्दुल्ला दीवाना, लिपि प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण–1973
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, एक सत्य हरिशचन्द्र, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 1967
4. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कजरीवन, आरती प्रकाश संस, दिल्ली, 1980
5. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूखा सरोवर, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1971
6. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कर्फ्यू, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली संस्करण, 1972
7. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, कलंकी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, संस्करण,1969
8. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गंगामाटी, पीताम्बर, बुक डिपो, दिल्ली संस्करण, 1977
9. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, गुरू शिप्रा प्रकाशन, आगरा, 1974
10. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, चतुर्भुज राक्षस, पी.ए. मिश्रा, अजमेर 1976
11. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, दर्पण, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली संस्करण 1966
12. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, नरसिंह कथा, मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।

ISSN : 0975-4520
Vol-24 No. 01(A) January-March 2021

13. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, तोता मैना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1962
14. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मादा कैक्टस, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
15. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, मिस्टर अभिमन्यु, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1975
16. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, यक्ष प्रश्न, राजपाल एण्ड संस दिल्ली, 1976
17. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रक्तकमल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1966
18. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, रातरानी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1962
19. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, राम की लड़ाई, अम्बर प्रकाशन, दिल्ली, 1983
20. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सगुन पंक्षी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1977
21. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सबरंग मोहभंग, सरस्वती विहार, 1977
23. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, पंचपुरुष, लिपि प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1978
24. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, सूर्यमुख, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
25. डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल, बलराम की तीर्थयात्रा, नई दिल्ली, पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी, द्वितीय संस्करण 1984